हैलो..
हां, भाई.
कैसी हो?
ठीक हूं.
मैं अभी तो गांव आ गया हूं, लेकिन जल्द ही तुमको वहां से ले जाऊंगा. कोई परेशानी तो नहीं है न?
आप दिसंबर के बाद आएंगे क्या?
नहीं..नहीं, मैं जल्दी कोशिश करुंगा.
जल्दी कोशिश करना. (रुआंसी आवाज)

भेड़ियों के चंगुल में जंगल की बेटियां

गरीबी के फंदे और दलालों के झांसों में फंसी हजारों लड़कियां और महिलाएं हर साल छत्तीसगढ़ के गांवों से निकलकर एक ऐसे नरक में पहुंच जाती हैं जहां उनकी जिंदगी भयानक शोषण की जीती-जागती तस्वीर बन जाती है. **राजकुमार सोनी** की रिपोर्ट

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से तीन सौ साठ किलोमीटर दूर नक्सल प्रभावित जिले अंबिकापुर के एक गांव कोलडीहा में जब देवलाल अपनी बहन पतांगो से फोन नंबर 8130948009 पर यह बातचीत कर रहा था तब तहलका की टीम भी वहां मौजूद थी. इस बातचीत से यह भी पता चला कि उत्तर प्रदेश में आजमगढ़ के रहने वाले अनिल यादव नाम के एक शख्स ने पतांगो का अपहरण किया था और फिर वह उसे दिल्ली ले गया था. फिलहाल एक घर में घरेलू काम करने वाली पतांगो ने यह भी बताया कि यादव उस पर देह व्यापार के लिए भी दबाव डाल रहा है.

पतांगो और देवलाल जैसी कहानियां छत्तीसगढ़ में हर साल हजारों की संख्या में बनती हैं. गरीबी से पैदा हुए हालात और इन हालात का फायदा उठाकर अपना हित साध रहे सैकड़ों दलाल राज्य की हजारों लड़कियों को शहरों के उस नरक में धकेल रहे हैं जहां उनकी जिंदगी हर तरह की यातना की जीती-जागती तस्वीर बनकर रह जाती है.

फरवरी, 2010 में पतांगो का तब अपहरण कर लिया गया था जब वह गांव सिलफिली से कोलडीहा जाने के लिए निकली थी. कुमदा मोड़ के पास कुछ लोगों ने उसे जबरिया एक जीप में बैठाया. पतांगो ने विरोध जताया तो उसके मुंह में कपड़ा ठूंस दिया गया. पतांगो छटपटाती रही और फिर बेहोश हो गई. जब उसे होश आया तो उसने खुद को शराब की टूटी हुई बोतलों और कोलाहल के बीच पाया. पतांगो को यह समझते देर नहीं लगी कि वह मुसीबत में फंस चुकी है. यादव उस पर देह व्यापार के लिए दबाव डालता रहा, लेकिन जब पतांगो इसके लिए तैयार नहीं हुई तो उसे घरेलू नौकरानी बना दिया गया. पिछले डेढ़ साल से पतांगो (क्वार्टर नंबर 2424, गुरु तेगबहादुर नगर, हर्बल लाइन, दिल्ली) झूठे बर्तनों को धोने-मांजने का काम कर रही है. एक रोज उसने इस घर के मालिक के फोन (जिसका जिक्र